

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलाजी, सत्र 19, मोक्ष, खींचा हुआ, बुलाया गया, उठाया गया, जीवन के लिए पुनरुत्थान

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, उद्धार, आकर्षित, बुलाया जाना, उठाया जाना, जीवन के लिए पुनरुत्थान।

हम चौथे सुसमाचार, योहानिन धर्मशास्त्र की शिक्षा का अध्ययन जारी रखते हैं। हम उद्धार के दूसरे पहलू से निपट रहे हैं, और वह है दो स्थान, या शायद तीन, एक ही अध्याय में दो, अध्याय छह, जहाँ लोगों को पिता द्वारा पुत्र की ओर खींचा जाता है। वास्तव में, उनमें से एक में, मेरा मानना है कि यह कहा गया है कि पुत्र लोगों को अपनी ओर खींचता है, और यह आकर्षक है।

हाँ, हुह, दिलचस्प है। खैर, चलो साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें सिखाएँ। हमारे दिलों को प्रोत्साहित करें। हम मध्यस्थ यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं कि आप और आपके राज्य के लिए हमारे जीवन महत्वपूर्ण हों।

आमीन। यदि आप चाहें तो चौथे सुसमाचार में उद्धार के अलग-अलग रूप हैं। यह अनंत जीवन है; यह एक चुनाव है, यह मृतकों का पुनरुत्थान है।

यहाँ यह है, यह परमेश्वर का उस दुनिया के प्रति प्रेम है जो उससे नफरत करती है। यहाँ चित्रण की धारणा है। मैं इसे इस बिनिटेरियन में रखना चाहता हूँ, मुझे खेद है, आत्मा को छोड़ दिया गया है, जॉन 6 में संदर्भ, जहाँ पिता और पुत्र उन सभी को बचाने के लिए एक साथ काम करते हैं जो विश्वास करेंगे, उन लोगों को बचाने के लिए जिन्हें पिता ने पुत्र को दिया है, उन लोगों को बचाने के लिए जो यीशु में विश्वास करते हैं।

और जैसा कि हमने पहले कहा, एक द्वित्ववादी सामंजस्य है। बेशक, मैं त्रित्ववादी सामंजस्य में विश्वास करता हूँ। जॉन सिर्फ आत्मा के काम को सहसंबंधित नहीं करता, कम से कम संकेतों की पुस्तक में इस बिंदु पर।

जीवन की रोटी के प्रवचन के बाद, ठीक है, इसके बीच में, मुझे कहना चाहिए, हमारे पास यह चियास्म है, जो श्लोक 35 से शुरू होता है। मैं जीवन की रोटी हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा, वह भूखा नहीं रहेगा।

जो मुझ पर विश्वास करता है, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी। हम यीशु के पास आ रहे हैं, इसे यीशु पर विश्वास करने के रूप में समानता द्वारा परिभाषित किया गया है। यीशु के पास आना, यीशु पर

विश्वास करना एक अच्छे भोजन का आनंद लेने या अपनी प्यास बुझाने, अपनी प्यास को संतुष्ट करने के रूप में आध्यात्मिक संतुष्टि प्रदान करता है।

लेकिन मैंने कहा, तुमने मुझे देखा है, फिर भी तुम मुझ पर यकीन नहीं करते। जो कुछ पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा। जो कोई मेरे पास आएगा, मैं उसे कभी नहीं निकालूँगा।

क्योंकि मैं अपनी इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से नीचे नहीं आया हूँ, बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने के लिए जिसने मुझे भेजा है, ताकि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से कुछ न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँ। मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, उसे अनन्त जीवन मिले, और मैं उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँगा। यह क्रिया पद 36 में शुरू होती है।

यीशु को देखना और 36 में विश्वास न करना A है।

A प्राइम 40 पर है, यीशु को देखना और उस पर विश्वास करना। 36, पिता लोगों को पुत्र को देता है और फिर पुत्र के पास आता है। यह श्लोक 39 है।

यह उन सभी बातों के बारे में बताता है जो उसने मुझे दी हैं। यह बी और बी प्राइम होगा। मुझे कुछ भी नहीं खोना चाहिए।

मैं कभी भी बाहर नहीं निकालूँगा। सी, श्लोक 37. सी प्राइम, 39, मुझे उन सभी में से कुछ भी नहीं खोना चाहिए जो उसने मुझे दिया है।

डी का अर्थ है, मैं उसकी इच्छा पूरी करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है, और फिर वह डी है, और डी प्राइम है, यह उसकी इच्छा है जिसने मुझे भेजा है। तो, हमारे पास

ए है, यीशु को देखना और विश्वास करना, इस मामले में विश्वास न करना, 36।

बी, पिता लोगों को पुत्र को देता है, और वे पुत्र के पास आते हैं।

सी, पुत्र उनकी रक्षा करता है, श्लोक 37.

डी, पुत्र पिता की इच्छा पूरी करता है।

डी प्राइम, पिता की इच्छा।

सी प्राइम, पुत्र किसी भी चुने हुए को नहीं खोता।

बी प्राइम, पिता ने लोगों को पुत्र को दिया।

ए प्राइम, देखना और विश्वास करना।

इसमें, उद्धार के इन पहलुओं के बीच, बड़ी तस्वीर यह है कि पिता लोगों को पुत्र को सौंपता है। चुनाव का एक यूहन्ना विषय। पिता उन्हें पुत्र की ओर खींचता है।

यह अब कोई चियास्म नहीं है; यह व्यवस्थित है। पिता लोगों को पुत्र को देता है, वह उन्हें पुत्र के पास खींचता है, वे पुत्र के पास आते हैं, वे पुत्र पर विश्वास करते हैं। पुत्र उसे अनन्त जीवन देता है।

पुत्र उन्हें सुरक्षित रखता है। पुत्र उन्हें अंतिम दिन जीवित करेगा। चुनाव और आकर्षित करना बुलावे के समान है।

विश्वास, संरक्षण, पुनरुत्थान। ये कार्य हैं; फिर से, आत्मा को छोड़ दिया गया है। ये कार्य हैं, पिता और पुत्र के आपसी कार्य।

मैं इसे एक बड़े बाइबिल परिप्रेक्ष्य से जोड़ता हूँ। यहाँ तक कि यूहन्ना का, निश्चित रूप से पौलुस का, चुनाव हमेशा पिता का कार्य है, सिवाय यूहन्ना 15, 16 और 19 के, कभी भी आत्मा का कार्य नहीं। आकर्षित करना पौलुस का आह्वान है, यह भी पिता का कार्य है।

विश्वास करना पापियों का काम है, क्योंकि परमेश्वर उन्हें सक्षम बनाता है, लेकिन लोग, मनुष्य, विश्वास करते हैं। पॉल में विश्वास, जॉन में विश्वास। कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा के बिना यह नहीं कह सकता कि यीशु प्रभु है।

गोद लेने की आत्मा हमें यह पुकारने में सक्षम बनाती है, अब्बा पिता। रोमियों 8:15, 16, पहला, 1 कुरिन्थियों 12। संरक्षण त्रिएकत्व का कार्य है।

यूहन्ना में, यह पिता और पुत्र का कार्य है। इस संदर्भ में, यूहन्ना 6 में, यह पुत्र का कार्य है। यूहन्ना 10 में, कोई भी उसे मेरे हाथ से नहीं छीन सकता, और कोई भी उसे पिता के हाथ से नहीं छीन सकता।

पिता और मैं ही हैं, जो भेड़ों की रक्षा करते हैं। उदाहरण के लिए, पॉल में, पवित्र आत्मा मुहर है, और त्रिदेव हमें सुरक्षित रखते हैं। अंतिम दिन पुनरुत्थान, शास्त्र में आधे अंश पिता कहते हैं, आधे पुत्र कहते हैं।

रोमियों 8 में आत्मा का उल्लेख है। यहाँ, पिता लोगों को पुत्र को देता है। पिता लोगों को पुत्र की ओर खींचता है।

यही वह बात है जिससे हम निपट रहे हैं। वे पुत्र के पास आते हैं। पुत्र उन्हें रखता है।

बेटा उन्हें अंतिम दिन जीवित करता है। जैसा कि मैंने पहले कहा, निश्चित रूप से द्वित्ववादी सद्भाव है। बेशक, त्रित्ववादी सद्भाव भी है।

यह यहाँ नहीं है। धर्मशास्त्र को शास्त्रों से लिया जाना चाहिए। इस संकीर्ण अर्थ में, आत्मा का उल्लेख ही नहीं किया गया है।

और फिर व्यक्तियों में भी एक निरंतरता है। यह वे लोग हैं जिन्हें पिता पुत्र को देता है, जिन्हें पिता पुत्र के पास खींचता है, जो पुत्र पर विश्वास करते हैं, जिन्हें पुत्र रखता है, जिन्हें पुत्र अंतिम दिन जीवित करता है, इस संदर्भ में। आप इसे स्वर्णिम जंजीर कह सकते हैं, जैसा कि लोग रोमियों 8, 29 और 30 में कहते हैं।

मैंने कभी नहीं सुना कि जॉन के लिए ऐसा किया गया था, लेकिन त्रित्ववादी सद्भाव, द्वित्ववादी सद्भाव और व्यवस्थित त्रित्ववादी सद्भाव है। और परमेश्वर के लोग, जिन्हें पिता पुत्र को देता है, अंतिम दिन पुत्र द्वारा उठाए जाते हैं। यह क्या खींच रहा है? श्लोक 37।

मुझे बुरा लगता है जब मेरे पास इस तरह का कोई गलत संदर्भ होता है। मैं माफी चाहता हूँ। हम इसे श्लोक 44 में देखते हैं, यह पक्का है।

कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले। मैं इसे उन पहले के श्लोकों में देखने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन मुझे यह नहीं मिल रहा है। कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता, इसका मतलब है मुझ पर विश्वास करो, श्लोक 35, समानता से इसे स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले।

पिता लोगों को पुत्र की ओर आकर्षित करता है। मैं पॉलिन भाषा में कहूँगा, वह प्रभावी रूप से उन लोगों को बुलाता है जिन्हें पिता पुत्र को देता है, लोगों को पुत्र के पास, ताकि वे पुत्र के पास आएँ, ताकि वे उस पर विश्वास करें। यह न केवल परमेश्वर द्वारा उद्धार की योजना बनाना और लोगों को चुनना, लोगों को पुत्र को देना दर्शाता है, बल्कि परमेश्वर और हम आम तौर पर इसे पवित्र आत्मा के रूप में सोचते हैं, हालाँकि पॉल में भी, जो बुलाता है वह वास्तव में पिता है।

पिता पौलुस में बुलाने वाला है। पिता चुने हुए लोगों को आकर्षित करता है, और वे आते हैं। वे पुत्र पर विश्वास करते हैं। यहीं पर यूहन्ना सबसे पहले उद्धार में पिता और पुत्र के कार्यों का समन्वय करता है।

हर जगह वह लोगों को मसीह में विश्वास करने के लिए बुलाता है। यहाँ हमें पर्दे के पीछे की झलक मिलती है, अगर आप चाहें तो, या एक धार्मिक नज़र, जैसा कि हम रोमियों 8, 29, और 30 में करते हैं, उस संदर्भ में जिसमें पौलुस संरक्षण की शिक्षा दे रहा है। यहाँ भी वह ऐसा ही करता है।

पिता ने जो लोग उसे दिए हैं, उन्हें वह अंतिम दिन फिर से जिलाएगा। पद 39: जिसने मुझे भेजा है, उसकी इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँ। इसमें वह देने से लेकर उठाने तक जाता है, और लेने, आने, रखने को छोड़ देता है।

यह दर्शाता है कि इस अनुच्छेद का जोर परमेश्वर के लोगों के संरक्षण पर है। चुने हुए लोगों को अनन्त जीवन के लिए उठाया जाएगा। 37, मुझे खेद है, एक गलत संदर्भ है।

44 एक बुरा संदर्भ नहीं है। कोई भी मुझ पर विश्वास नहीं कर सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले। जॉन कई बार कहते हैं, विश्वास करो।

यदि आप विश्वास नहीं करते, तो आप अपने पापों में मरते रहेंगे, और मरते रहेंगे। और यह सच है। और फिर भी, यहाँ हमारे पास एक योग्यता है, जो सिखाती है कि पिता अपने लोगों में

रहस्यमय तरीके से काम करता है ताकि उन्हें अपने बेटे में विश्वास करने के लिए प्रभावी रूप से बुला सके।

12, 32, वह स्थान है जहाँ यीशु स्वयं के बारे में इस भाषा का प्रयोग करते हैं। वह वही है जो परमेश्वर के लोगों को अपनी ओर खींचता है। और यह एक सार्वभौमिक आकर्षण है।

वह सभी लोगों को अपनी ओर खींचता है। यूहन्ना 12:32 में, यूहन्ना गतसमनी में, यीशु कहते हैं, क्या मैं कहूँ, हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? बिलकुल नहीं। मैं इसी उद्देश्य से इस घड़ी में आया हूँ।

पिता, अपने नाम की महिमा करें। स्वर्ग से आवाज़ आती है, मैंने इसे महिमा दी है, और हम इसे फिर से महिमा देंगे। इस सुसमाचार में पाप की प्रमुख अभिव्यक्ति अविश्वास है।

लोग स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ भी नहीं समझ सकते। अब इस दुनिया का न्याय है, 31. अब, क्या इस दुनिया के शासक को बाहर निकाल दिया जाएगा? और मैं, यहाँ हमारी चिंता है, हमारी बड़ी चिंता है, 32.

और जब मैं धरती से ऊपर उठा लिया जाऊंगा, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि जब मैं क्रूस पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सभी लोगों को अपने पास खींच लूंगा। उसने यह इसलिए कहा ताकि पता चल सके कि वह किस तरह की मौत मरने वाला है। तब भीड़ ने उसे उत्तर दिया, हमने व्यवस्था की बात सुनी है कि मसीह हमेशा रहता है।

तुम कैसे कह सकते हो कि मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाया जाना चाहिए? यह मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उनसे कहा, "ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है। जब तक ज्योति तुम्हारे पास है, तब तक चलते रहो, कहीं ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेर ले। जो अन्धकार में चलता है, वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है।"

जब तक तुम्हारे पास ज्योति है, ज्योति पर विश्वास करो ताकि तुम ज्योति के पुत्र बन सको। और जब मैं क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय पृथ्वी से ऊपर उठा लिया जाऊंगा, तो मैं सभी लोगों को अपने पास खींच लूंगा। इसे यूहन्ना 6:44 में पिता के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था।

यहाँ, इसे पुत्र के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। यदि आप इसे बनाते हैं, यदि आप इसे एक प्रभावी आकर्षण या बुलावा के रूप में समझते हैं, जो स्पष्ट रूप से अध्याय 6 में मामला है, क्योंकि जो दिए गए और खींचे गए हैं वे आते हैं, संरक्षित होते हैं, और उठाए जाते हैं। यहाँ, आपके पास एक सार्वभौमिकता है, और हर कोई बच जाएगा।

सभी लोगों के अर्थ पर निर्भर करता है। यदि यह वस्तुतः सभी लोगों का है, बिना किसी अपवाद के सभी का, तो या तो आपके पास पूर्ण सार्वभौमिकता है, सभी को बचाया गया है, जो जॉन के सुसमाचार के साथ फिट नहीं बैठता है, या आपके पास एक अप्रभावी चित्रण है, जो पापियों को विश्वास करने और बचाए जाने का अवसर देता है। मैं संदर्भ से सुझाव देने जा रहा हूँ, और विभिन्न

धार्मिक दृष्टिकोणों से विभिन्न लेखकों ने मुझे यह सिखाया है या मेरे विचार की पुष्टि की है; मुझे नहीं पता कि पहले कौन आया।

यूनानी, कुछ यूनानी पद 20 में आते हैं। यह वह स्थान है जहाँ यूहन्ना पूर्वानुमान लगाता है, जैसा कि वह यूहन्ना 10 में अन्य भेड़ों के साथ करता है, मेरे पास अन्य भेड़ें हैं जो इस झुंड की नहीं हैं, अध्याय 11 में कैफा की भविष्यवाणी के साथ, परमेश्वर के बिखरे हुए बच्चों में केवल यहूदी ही नहीं, बल्कि अन्यजाति भी शामिल हैं। यहाँ, कुछ यूनानी पर्व पर आराधना करने आते हैं, और वे यीशु से बात करना चाहते हैं।

यीशु के शिष्यों ने संदेश आगे बढ़ाया और यीशु से मुलाकात करने के लिए कहा, लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने निश्चित रूप से तुरंत जवाब नहीं दिया, बल्कि उन्होंने अपने समय के बारे में बात की, उनका समय आ गया है। यह उन जगहों में से एक है जहाँ मैं हमेशा कहता हूँ, 12 का अंत, 13 की शुरुआत, उनका समय आ गया है।

यहाँ यह है, मनुष्य के पुत्र की महिमा होने का समय आ गया है। फिर हमारे पास गेहूँ का यह दाना ज़मीन में गिरता हुआ रूपक है, जो यीशु की मृत्यु, फल देने और उसके शिष्यों द्वारा खुद के लिए मरने और फल देने दोनों की बात करता है। हमने देखा कि 25 का अंत एक वास्तविक भविष्यवादी, या अभी तक नहीं, अनंत जीवन का संदर्भ है।

वे जॉन में आम नहीं हैं, लेकिन वहाँ यह है। तब से, मैंने इसे पहले ही संक्षेप में प्रस्तुत कर दिया है। जोहानियन गेथसेमेन, स्वर्ग से आवाज़, लोगों को समझ में नहीं आ रहा है, और फिर यीशु ने बेटे के क्रूस पर चढ़ने में शैतान को पराजित करने, उसके ऊपर उठाए जाने के बारे में बात की।

मैं सुझाव दूंगा कि यहाँ चित्र प्रभावी नहीं है। मुझे नहीं पता कि यह प्रभावी है या नहीं। अगर यह प्रभावी है, तो मैं जॉन 6 के साथ अच्छी तरह से समन्वय करूंगा।

सभी लोगों का मतलब सार्वभौमिक रूप से पूर्ण नहीं है। इसका मतलब बिना किसी अपवाद के सभी लोग नहीं है, बल्कि बिना किसी भेदभाव के सभी लोग हैं। यानी इसमें यूनानी और गैर-यहूदी दोनों शामिल हैं।

इसलिए, हालांकि मैं अनिश्चित लग रहा हूँ, और मैं धर्मशास्त्र से ज़्यादा बाइबल से संबंधित होना चाहता हूँ, पाठ के साथ सावधान रहना चाहता हूँ, मैं कहूँगा कि चित्रण प्रभावी है, और सभी लोग शाब्दिक रूप से सभी लोग नहीं हैं, बल्कि, सिर्फ यहूदी ही नहीं, सभी प्रकार के लोग, सभी बिना किसी भेदभाव के, जो भेदभाव नस्लीय या जातीय से ज़्यादा होंगे, कम से कम आवेदन के माध्यम से। उनमें हर भाषा, हर जनजाति, हर बोली, हर इलाके, दुनिया के हर स्थान, हर देश, और इसी तरह के लोग शामिल होंगे। यूहन्ना में उद्धार को कई दृष्टिकोणों से देखा गया है।

यहाँ एक बहुत ही सीमित उदाहरण है, जिसमें उद्धार का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि पिता लोगों को ईश्वरीय प्रक्रिया के भाग के रूप में अपनी ओर खींचता है, पिता और पुत्र लोगों को बचाने के लिए मिलकर काम करते हैं। यहाँ, एक ही शब्द का प्रयोग किया गया है; यह शिकार और मछली पकड़ने जैसा शब्द है, मछली को खींचना और मछली को खींचकर लाना, उदाहरण

के लिए, कूस पर स्वयं पुत्र का होना। मेरे लिए एक स्पष्ट उदाहरण, शुक्र है, उद्धार है, परमेश्वर के लोगों का पुनरुत्थान जीवन में हुआ।

हम इसे यूहन्ना 5 में पाते हैं। हमने पहले भी ऐसा किया है, इसलिए मैं इस पर ज़्यादा समय नहीं बिताऊँगा, लेकिन यूहन्ना 5 में, यह एक जीवन देने वाला अंश है। पुत्र अनंत जीवन का दाता है। उसने अभी-अभी एक ऐसे व्यक्ति को जीवन दिया है जो 38 वर्षों से लंगड़ा है, और यहूदी नेता खुश नहीं हैं क्योंकि वह उस व्यक्ति को अपना बिस्तर उठाकर चलने के लिए कहकर सब्त का उल्लंघन कर रहा है, और इतना ही नहीं, बल्कि वह परमेश्वर को अपने पिता को एक ऐसे तरीके से बुला रहा है जो वास्तव में बहुत अनुचित है, खुद को परमेश्वर के बराबर बना रहा है, श्लोक 18। जवाब में, यीशु कहते हैं, वह हमेशा पिता की इच्छा पूरी करता है, वह यहाँ अकेला नहीं है, वह हमेशा पिता की इच्छा पूरी करता है, और केवल वही करता है जो वह पिता को करते हुए देखता है। यह श्लोक 19 है, और यह दिव्य ज्ञान, दिव्य चीज़ों की बात करता है।

और पुत्र जीवन देता है, जैसे पिता मरे हुएों को जिलाता है और उन्हें जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहता है उसे जीवन देता है। इसके तुरंत बाद आने वाले श्लोक पुत्र को पुनर्जीवित मानव के रूप में बताते हैं। वह उपदेश देता है, जब लोग विश्वास करते हैं, वे पिता पर विश्वास करते हैं, वे अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, और वे आध्यात्मिक पुनरुत्थान का अनुभव करते हैं, वे मृतकों के दायरे से जीवितों के दायरे में चले जाते हैं।

जो कोई मेरा वचन सुनता है, 24, उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, अब उसका अनन्त जीवन है। उस पर न्याय नहीं होता, बल्कि वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुका है; अर्थात् आत्मिक पुनरुत्थान, अर्थात् पुनर्जन्म। इसलिए, यह जी उठना भविष्य का शाब्दिक पुनरुत्थान या शारीरिक पुनरुत्थान नहीं है; यह वर्तमान आत्मिक पुनरुत्थान है।

हालाँकि, 28 और 29 में, हमारे पास इसका पूरक है; हमारे पास अभी तक पुनरुत्थान नहीं है, और आध्यात्मिक पुनरुत्थान नहीं है, लेकिन शारीरिक पुनरुत्थान है, या यदि आप चाहें तो, शारीरिक, आध्यात्मिक पुनरुत्थान, विश्वासियों की ओर से। मैं तुमसे सच कहता हूँ, श्लोक 25, एक समय आ रहा है, और अब यहाँ है, जब मृतक परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे अभी जीवित होंगे, फिर से जन्म लेंगे, पुनर्जीवित होंगे। क्योंकि जैसा कि पिता के पास आंतरिक रूप से जीवन है, यह एक दिव्य गुण है, यह एक दिव्य अधिकार है, यह सच्चे और जीवित परमेश्वर होने का हिस्सा है, और यह एक दिव्य गुण है।

इसलिए, उसने पुत्र को भी अपने देहधारी रूप में, अपने अंदर जीवन रखने की अनुमति दी है। और पुत्र भी न्यायकर्ता है, क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है, वह मनुष्य का प्रतिनिधि है। इस पर आश्चर्य मत करो, आश्चर्यचकित मत हो कि अब आध्यात्मिक पुनरुत्थान है, मनुष्य के पुत्र के शब्दों में।

क्या शानदार दावे हैं। उनके शब्दों में, लोग आध्यात्मिक मृत्यु से आध्यात्मिक जीवन की ओर जाते हैं। नया जीवन, पिछली स्थिति की तुलना में इतना आश्चर्यजनक है कि इसकी तुलना मृतकों के पुनरुत्थान से की जाती है।

और यह आश्चर्य की बात नहीं है, वह कहते हैं क्योंकि यह पुत्र की आवाज़ है जो मृतकों को सचमुच, शारीरिक रूप से, उनकी कब्रों से उठाएगी। इस पर आश्चर्य मत करो, यूहन्ना 5, 28-29, एक समय आ रहा है। इसके विपरीत पर ध्यान दें।

एक समय आ रहा है और अब आ गया है, 25, जब लोग पुनर्जीवित होंगे, आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित होंगे। लेकिन अब, एक समय आ रहा है, 28, यह अभी नहीं है, जब कब्रों में पड़े सभी लोग उसकी आवाज़ सुनेंगे, और बाहर आएँगे, जिन्होंने अच्छा किया है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए, जिन्होंने बुरा किया है वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए। यहाँ, साथ-साथ, आध्यात्मिक पुनरुत्थान, शारीरिक पुनरुत्थान, पुनर्जन्म, शरीर का पुनरुत्थान है।

इस प्रकार यह पहले से ही पुनरुत्थान है, पुनर्जन्म में, पुनरुत्थान, अभी तक कब्र या कब्रों से उठाए गए शरीर में नहीं। 29 और 30, 30 में, मुझे खेद है, 29 ने लोगों को हैरान कर दिया है। ओह, वैसे, 28, पुनरुत्थान में, कभी-कभी पिता वह होता है जिसकी आवाज़ मृतकों को उठाती है, दूसरी बार यह पुत्र होता है।

पवित्र आत्मा कभी नहीं है। सिस्टमैटिक्स का कहना है, चूंकि त्रिएकत्व, व्यक्ति अविभाज्य हैं, मृतकों का पुनरुत्थान पवित्र त्रिएकत्व, विशेष रूप से पिता और पुत्र का कार्य है। पवित्रशास्त्र कभी भी आत्मा के बारे में नहीं कहता है, वास्तव में, यह एक जगह, रोमियों 8 में, इस पर संकेत देता है, यह इस पर संकेत से भी अधिक है।

मैं इसे वापस ले लूंगा। आत्मा मरे हुएों को जिलाने में भूमिका निभाती है। रोमियों 8:11.

यदि यीशु को मृतकों में से जीवित करने वाले की आत्मा, एक वाक्यांश में संपूर्ण त्रित्व है, यहाँ तक कि एक खंड भी नहीं। यदि पिता की आत्मा, आत्मा, पवित्र आत्मा, पिता की जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया, आप में वास करती है, जिसने मसीह यीशु को मृतकों में से जीवित किया, वह पिता है, वह आपके नश्वर शरीर को भी जीवन देगा, इसलिए तकनीकी रूप से पिता यहाँ पुनरुत्थानकर्ता है, लेकिन वह यह सब अपनी आत्मा के माध्यम से करता है जो आप में वास करती है। रोमियों 8:11 सिखाता है कि पिता ही वह है जो मृतकों को जीवित करता है, लेकिन वह पवित्र आत्मा के माध्यम से ऐसा करता है।

और इसमें पहचान की निरंतरता है कि पिता हमारे नश्वर मरते हुए शरीरों को जीवन देगा, लेकिन वह ऐसा आत्मा के माध्यम से करेगा। इसलिए, पुनरुत्थान त्रिदेवों का कार्य है, विशेष रूप से पिता और पुत्र का। यूहन्ना 5 की आयत 29, और वे पुत्र की आवाज़ पर कब्रों से बाहर आएँगे, जिन्होंने अच्छा किया है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए, जिन्होंने बुरा किया है वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए।

बाद वाली बात को समझना आसान है। परमेश्वर लोगों को उनके कर्मों के लिए न्याय करता है, और उद्धार न पाने वाले लोगों को उनके पापपूर्ण कर्मों के लिए दंडित किया जाता है। यह परमेश्वर का बहुत न्यायपूर्ण कार्य है।

कोई भी शिकायत नहीं कर सकता। आप कहते हैं, क्या वे इसलिए दोषी नहीं ठहराए जाते क्योंकि वे यीशु पर विश्वास नहीं करते? नहीं, एकमात्र उपाय यीशु पर विश्वास करना है, लेकिन उनकी निंदा का आधार, यीशु पर अविश्वास नहीं है; यह उनके पाप हैं। पूरा हिसाब देने के लिए, यह उनके पापपूर्ण विचार, शब्द और कर्म हैं।

प्रकाशितवाक्य 20 के बारे में सोचें। मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन देखा, पद 11, और जो उस पर बैठा है, वह पिता है। उसकी उपस्थिति से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिए कोई जगह नहीं मिली।

मैं इसे शाब्दिक नहीं मानता, बल्कि इसे प्रतीकात्मक मानता हूँ। उसकी उपस्थिति विस्मयकारी है। स्वर्ग और पृथ्वी, स्वर्ग, उत्पत्ति 1.1, यदि वे कर सकते तो उससे दूर भाग सकते थे, मानवीकरण, उसकी पूरी विस्मयकारीता को दिखाने के लिए।

मैंने देखा कि मरे हुए लोग, बड़े और छोटे, सिंहासन के सामने खड़े थे, और किताबें खोली गईं। एक और किताब खोली गई, जीवन की किताब। मरे हुएओं का न्याय उनके कामों के अनुसार किताबों में लिखे अनुसार किया गया।

न्याय कर्मों पर आधारित है। हरमन रिडरबोस, पॉल और उनके धर्मशास्त्र की रूपरेखा की तुलना करें। उनके अध्यायों में से एक का शीर्षक है कार्यों के अनुसार न्याय।

काम हमारे लिए एक जीवंत शब्द है, एक वर्जित शब्द। मैं कहता हूँ कि कर्मों के अनुसार न्याय, लेकिन यह एर्गा है, यह वही शब्द है जिसका अनुवाद काम है। उसने उन मृतकों को छोड़ दिया जो उसमें थे, मृत्यु और अधोलोक ने उन मृतकों को छोड़ दिया जो उनमें थे, और उनमें से प्रत्येक का न्याय किया गया, उनके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार।

और यह हर न्याय मार्ग में है जिसमें न्याय का आधार दिया गया है। यह हमेशा कर्म, कभी शब्द, विचार, कभी विचार, कभी शब्द होते हैं, जिन्हें मैं कर्मों की बड़ी श्रेणी में शामिल कर रहा हूँ। वैसे, इस मार्ग में, जैसा कि ग्रेग बील ने अपने विशाल और अद्भुत रहस्योद्घाटन टिप्पणी में दिखाया है, ईश्वरीय संप्रभुता का भी एक संकेत है।

जीवन की पुस्तक नए यरूशलेम का स्वर्गीय रजिस्टर है और इस प्रकार, यह एक पूर्वनिर्धारित मूल भाव है। यह दूसरे को कमतर नहीं आंकता। न्याय हमेशा कर्मों पर आधारित होता है, लेकिन कुछ स्थानों पर, यह उनमें से एक है।

और दिलचस्प बात यह है कि बाइबल में अंतिम निर्णय का एक महत्वपूर्ण अंश, पूर्वनियति का तनाव है। क्या यह कर्मों के आधार पर निर्णय को रद्द कर देता है? नहीं, लेकिन यह इसे योग्य बनाता है। मैं जॉन 5:29 पर वापस आ गया हूँ।

मनुष्य के बेटे की आवाज़ सुनकर लोग बाहर निकल आते हैं। जिन्होंने बुरे काम किए हैं, वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए उठ खड़े होंगे। कोई समस्या नहीं।

उनका न्याय किया जाता है, उन्हें दोषी ठहराया जाता है, वे अपने पापों के कारण नरक में जाते हैं। मुश्किल बात यह है कि वे आते हैं और बाहर निकलते हैं, जिन्होंने जीवन के पुनरुत्थान के लिए अच्छा काम किया है। यही बात बाइबल लगातार सिखाती है।

क्या यह मसीह में विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उद्धार को खतरे में नहीं डालता? नहीं, यह उद्धार नहीं है। यह न्याय है और न्याय कर्मों पर आधारित है। क्योंकि विश्वास का न्याय नहीं किया जा सकता।

विश्वास कर्मों से प्रकट होता है। जेम्स 2, मुझे कर्मों के बिना अपना विश्वास दिखाओ। यह असंभव है।

मैं तुम्हें अपने कामों से अपना विश्वास दिखाऊंगा। पहला काम असंभव है, और जेम्स थोड़ा व्यंग्यात्मक हो रहा है।

तुम मानते हो कि शैतान भी मानते हैं कि कर्मों के बिना विश्वास मरा हुआ है। यह जीवित विश्वास नहीं है। इनके बिना मुझे अपना विश्वास दिखाओ।

मैं अपने कर्मों से तुम्हें अपना विश्वास दिखाऊंगा। परमेश्वर के संतों की ओर से दिखाए जाने वाले कर्म ही उनके जीवन के पुनरुत्थान का आधार हैं। वे इस एक सहित कई अंशों की व्याख्या हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

परमेश्वर ने उनमें और उनके माध्यम से पवित्रीकरण का कार्य किया। जॉन मुरे ने अपनी रोमन टिप्पणी में यह सिखाया और उन्होंने कहा कि यह हमें एक बुद्धिमानी भरा वचन देता है। हम भूल जाते हैं कि पवित्रीकरण उतना ही परमेश्वर का कार्य है जितना कि औचित्य।

और यह सच है; हालाँकि हम एक तरह से पवित्रीकरण में सहयोग करते हैं, लेकिन हम निश्चित रूप से औचित्य में सहयोग नहीं करते हैं। तो, क्या मैं यह कह रहा हूँ कि यह अनुग्रह के बिना कामों पर आधारित निर्णय है? नहीं, बिल्कुल नहीं। यह उन कामों पर आधारित निर्णय है जो अनुग्रह का फल हैं।

और मैं इसे फिर से दोहराऊंगा। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा इन अच्छे कार्यों के लेखक हैं। हम अच्छे काम करते हैं, लेकिन परमेश्वर अपने लोगों के माध्यम से उन अच्छे कामों को करता है, और उसे महिमा मिलती है।

और हम अंतिम निर्णय पर यह नहीं कहने जा रहे हैं, ठीक है मैं अद्भुत था और मुझे पता है कि हम यीशु की प्रशंसा करने जा रहे हैं मुझे बचाने के लिए, न केवल मुझे एक बार और हमेशा के लिए औचित्य में धर्मी घोषित करने के लिए, बल्कि मुझे आत्मा देने और मुझमें ईश्वरीय कार्य उत्पन्न करने के लिए। आप जानते हैं कि जिन संतों को मैं जानता हूँ जो सबसे अधिक अच्छे काम करते हैं, वे हिसाब नहीं रखते हैं। वे मैथ्यू 25, भेड़ और बकरियों में लोगों की तरह हैं।

प्रभु, हमने आपको जेल में कब देखा? हम आपसे कब मिलने गए? हमने यह कब किया? हमने उसमें क्या मदद की? प्रभु इसका हिसाब रखते हैं। मैं हैरान हूँ। पिता इसके लिए जिम्मेदार हैं।

तो, मैं फिर से कहूँगा। संत वास्तव में ये अच्छे काम करते हैं। पुण्य के रूप में? नहीं, बिलकुल नहीं।

जो लोग परमेश्वर की कृपा से मुक्त रूप से बचाए गए हैं वे नए हैं और वे परमेश्वर की सेवा करते हैं और वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं और वे परमेश्वर के लिए जीते हैं। एक अच्छा पेड़ अच्छे फल पैदा करता है। एक अच्छा पेड़ एक अच्छा पेड़ कैसे बनता है? परमेश्वर की कृपा से।

पिता हम में कार्य करता है, फिलिप्पियों 2 से 12 के बीच, ताकि हम उसकी अच्छी इच्छा के लिए इच्छा करें और कार्य करें। अपने उद्धार के लिए भय और कांपते हुए कार्य करें - परमेश्वर के लोगों के लिए मानवीय जिम्मेदारी।

अपने उद्धार के लिए काम मत करो; परमेश्वर ने जो काम किया है, उसे पूरा करो। अपने उद्धार के लिए भय से काम करो, क्योंकि, कारण खंड के लिए, यह परमेश्वर है जो तुम्हारे अंदर इच्छा और काम दोनों को अपनी अच्छी इच्छा के लिए काम करता है। अंतिम निर्णय में जो काम दिखाई देते हैं, वे वास्तव में हमारे काम हैं जो दिखाई देते हैं क्योंकि हम बेल में रहते हैं, यीशु, यूहन्ना 15, जिन्होंने कहा, मेरे बिना, तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

इसलिए, पिता की इच्छा है, यहाँ तक कि प्रभु की सेवा करने के लिए हमारे पास जो अच्छे विचार हैं, वे भी परमेश्वर से हैं और उन्हें महिमा मिलती है। वह हममें इच्छा करने और अपनी अच्छी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए कार्य करता है। यीशु ईश्वरीय है।

हम उससे अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकते। उसमें बने रहकर हम परमेश्वर की महिमा के लिए अच्छे काम करते हैं। और, बेशक, ये पवित्र आत्मा के फल हैं, गलातियों 5। ये शरीर के काम नहीं हैं जो परमेश्वर को हमारे गुणों के लिए स्वीकार करने के लिए सौंपे गए हैं, प्रभु।

नहीं, वह हमें अपनी कृपा से तुम्हारे लिए स्वीकार करता है, हमें आत्मा देता है, हमारे अंदर फल पैदा करता है, और यह पवित्र आत्मा का फल है। क्या हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं है? नहीं, हमने परमेश्वर के साथ काम किया, जिसने हमारे अंदर काम किया। और फिर उसके साथ बेटा, जिसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते।

और आत्मा ने हम परमेश्वर के लोगों में वह फल उत्पन्न किया। बस इतना ही काफी है। यूहन्ना 6 में बार-बार कहा गया है कि यीशु ही वह व्यक्ति है जो अंतिम दिन मृतकों को जीवित करेगा।

संपूर्ण रूप से कहें तो, पिता कई अंशों में पुनरुत्थानकर्ता है। मुझे लगता है कि यह लगभग 50-50 है, पिता और पुत्र। 6:39, पिता की यही इच्छा है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन फिर से जिलाऊँ।

यूहन्ना 6:40, जिसने मुझे भेजा है उसकी यही इच्छा है, मेरे पिता की भी यही इच्छा है। जो कोई पुत्र को देखता है और उस पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलेगा, और मैं उसे अंतिम दिन जिला उठाऊँगा। 44, कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता ने मुझे भेजा है और उसे खींच न ले, और मैं उसे अंतिम दिन जिला उठाऊँगा, आपने सही अनुमान लगाया।

54, जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, जो मुझ पर और मेरे प्रायश्चित पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और मैं उसे अंतिम दिन जिला उठाऊँगा। उद्धार जीवन के लिए पुनरुत्थान है। यहाँ जोर आध्यात्मिक पुनरुत्थान पर नहीं है जैसा कि यूहन्ना 5 में पहले बताया गया है। यूहन्ना 5:24 और 25.

यह एक शारीरिक पुनरुत्थान है। आत्मा की अमरता की यूनानी, हेलेनिस्टिक दार्शनिक धारणा ईसाई धर्म का सबसे बड़ा लाभ या सर्वोच्च आशीर्वाद नहीं है। नहीं, हम शरीर के पुनरुत्थान की कामना करते हैं।

भगवान ने सबसे पहले शरीर बनाया। अब हम शरीरधारी होकर जीते हैं। इसलिए मृत्यु असामान्य और अस्थायी है, यहाँ तक कि शरीर से अनुपस्थित और भगवान के साथ मौजूद होने की मृत अवस्था भी, जो अद्भुत है, लेकिन यह सबसे अच्छी नहीं है।

पॉल कहते हैं, फिलिप्पियों 1:19 से 21 तक, शरीर में प्रभु को जानने से बेहतर है क्योंकि हमारे पाप दूर हो गए हैं और हम यीशु की तत्काल उपस्थिति में होंगे। लेकिन सबसे अच्छा अभी आना बाकी है। सबसे अच्छा है कि हम जी उठें और हमारे नश्वर शरीर को परमेश्वर द्वारा बदला जाए। 1 कुरिन्थियों 15 में रूपांतरित होना ही मुख्य शब्द लगता है, हमारे वर्तमान नश्वर शरीर का शक्तिशाली, अमर, अविनाशी, गौरवशाली, आत्मा-सशक्त शरीर में परिवर्तन हमें आने वाले युग के लिए तैयार करता है।

यह वास्तव में एक ऐसी मुक्ति है जिसकी हमें आशा करनी चाहिए। यह पहले से ही है। यह अभी तक नहीं है।

अपने अंतिम व्याख्यान में, हम इस बात पर विचार करेंगे कि यीशु अपने लोगों को कैसे बचाता है और हम अंतिम बातों के पूरे मामले को पहले से ही और अभी तक नहीं के परिप्रेक्ष्य में रखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 19 है, उद्धार, खींचा जाना, बुलाया जाना, उठाया जाना, जीवन के लिए पुनरुत्थान।